विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 12 | अंक : 48 | दिसंबर, 2019

पटना में पं. रामचंद्र भारद्वाज की जयंती के अवसर पर समारोह एवं कवि-सम्मेलन

6 दिसंबर, 2019 को साहित्य सम्मेलन, पटना में पं. भारद्वाज की जयंती के अवसर पर एक समारोह एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

पृ. 2

दक्षिण अफ़्रीका में हिंदवाणी की 21वीं वर्षगाँठ

2019 में हिंदवाणी की 21वीं वर्षगाँठ मनाई गई। 1998 में क्वा ज़ुलु नेटल में एफ़.एम. फ़्रीक्वेंसी एयरवेव्स में काफ़ी बदलाव आया। पहली बार एक समर्पित हिंदी रेडियो स्टेशन रेडियो की दुनिया में छा गया। 'हिंदवाणी' हिंदी शिक्षा संघ द्वारा संचालित है। यह एक 24 घंटे रेडियो स्टेशन है, जिसमें हिंदी भाषा प्रमुख रूप से बोली जाती है। यह समुदाय का अभिन्न अंग बन गया है। 21 साल बाद भी स्वयंसेवकों द्वारा चालित हिंदवाणी अद्‌भुत समर्पण और दृढ़ विश्वास के साथ खड़ा है।

पृ. 5

टी.यू.एफ़.एस. तोक्यो, जापान में 'बापू की रोशनी' नाटक का मंचन

10 जनवरी, 2020 को जापान की राजधानी तोक्यो स्थित तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के हिंदी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित 'बापू की रोशनी' लघु नाटक का मंचन किया गया।

पृ. 6

भोपाल में कम्प्यूटर व मोबाइल पर भारतीय भाषाओं में कार्य करने हेतु कार्यशाला

14 दिसंबर, 2019 को हिंदी भवन, भोपाल में 'कम्प्यूटर एवं मोबाइल में कार्य करने की सुविधाओं के लिए' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में टेक्नोक्रेट एवं तकनीकी विषयों के वरिष्ठ लेखक रवि रतलामी उपस्थित थे।

पृ. 3-4

नई दिल्ली में 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' का लोकार्पण

18 अगस्त, 2019 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय की पुस्तक 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' का लोकार्पण हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय मंत्री माननीया श्रीमती स्मृति ईरानी और विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफ़ेसर नरेन्द्र कोहली उपस्थित रहे।

पृ. 7

जयपुर में गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार वितरण समारोह

11 नवंबर, 2019 को महाराणा प्रताप सभागृह, भारतीय विद्या भवन, जयपुर में चुरू ज़िले के सम्मानित विधायक श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ की अध्यक्षता में 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार' वितरण समारोह संपन्न हुआ।

पृ. 10

इस अंक में आगे पढ़ें :

सम्मेलन / कार्यशाला / व्याख्यान / महोत्सव / वर्षगाँठ / काव्यांजलि / मंचन / हिंदी दिवस	पृ. 2-6
लोकार्पण	पृ. 7-9
पुरस्कार / सम्मान	पृ. 10-13
श्रद्धांजलि	पृ. 13-14
सूचना	पृ. 14-15
संपादकीय	पृ. 16

ISSN 1694-2485

सम्मेलन / कार्यशाला / व्याख्यान / महोत्सव / वर्षगाँठ / काव्यांजलि / मंचन / हिंदी दिवस

पटना में पं. रामचंद्र भारद्वाज की जयंती के अवसर पर समारोह एवं कवि-सम्मेलन

6 दिसम्बर, 2019 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में पं. भारद्वाज की जयंती के अवसर पर एक समारोह एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। इस अवसर पर उद्बोधन देते हुए डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि *"बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के पूर्व प्रधानमंत्री और यशस्वी कवि पं. रामचंद्र भारद्वाज कोमल भावनाओं के अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावशाली कवि थे। अपनी कविताओं को वे बड़े ही प्रभावशाली ढंग से पढ़ा करते थे। जीवन में उत्साह का सृजन करने वाली उनकी कविताएँ श्रोताओं के हृदय को स्पर्श करती थीं। साहित्य के क्षेत्र से उन्हें राज्यसभा के सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया था। सम्मेलन के प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यों को व्यापक सराहना मिली।"*

इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन के वरीय उपाध्यक्ष श्री नृपेंद्र नाथ गुप्त ने कहा कि *"भारद्वाज जी अपने समय के महत्त्वपूर्ण कवियों में से एक थे। साहित्य के साथ राजनीति में भी उनकी रुचि थी। किंतु उन्होंने राजनीति को कभी भी साहित्य पर प्रभावी नहीं होने दिया। उन्होंने राजनीति उतनी ही की, जितनी साहित्य ने अनुमति दी।"*

समारोह का उद्घाटन मगध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मेजर बलबीर सिंह 'भसीन' ने किया। बिहार राज्य अभिलेखागार के पूर्व निदेशक डॉ. तारा शरण सिन्हा, सम्मेलन के प्रधानमंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय, उपाध्यक्ष डॉ. मधु वर्मा, वरिष्ठ कवि बाबूलाल मधुकर, श्रीकांत सत्यदर्शी तथा वीरेंद्र कुमार यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी का आरंभ कवयित्री चंदा मिश्र ने वाणी-वंदना से किया। वरिष्ठ कवि और सम्मेलन के उपाध्यक्ष मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', डॉ. शंकर प्रसाद, वरिष्ठ शायर आर.पी. घायल, कवयित्री भावना शेखर, नीलांशु रंजन, शायरा तलत परवीन, वरिष्ठ कवि बच्चा ठाकुर, मधुरेश नारायण, डॉ. मेहता नरेंद्र सिंह, व्यंग्य के कवि ओम प्रकाश पाण्डेय, राज कुमार प्रेमी, जय प्रकाश पुजारी, शायरा मासूमा खातून, डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, माधुरी भट्ट, पं गणेश झा, छट्ठू ठाकुर, डॉ. मनोज गोवर्धनपुरी, यशोदा शर्मा, डॉ. मोईन गिरीडिहवी, विश्वनाथ वर्मा, हरेंद्र त्रिपाठी, गीता सिन्हा, सच्चिदानंद सिन्हा, श्रीकांत व्यास, अरविंद कुमार सिंह, कन्हैया सिंह 'कान्हा', अभिलाषा कुमारी, कुमार अनुपम, डॉ. एम.के. मधु, सुनील कुमार, रश्मि गुप्त, नीता सिन्हा आदि कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। मंच का संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्णरंजन सिंह ने किया।

साभार : नेशन रिपब्लिक न्यूज़.कॉम

शाहजंग में कवि-सम्मेलन में दो दर्जन कवियों ने किया रचना-पाठ

13 अक्तूबर, 2019 को हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद की प्रादेशिक सभा महाराष्ट्र हिंदी प्रचार सभा, औरंगाबाद ने शाहजंग स्थित महाराष्ट्र हिंदी विद्यालय में हिंदी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया। इसके माध्यम से हिंदी के नवोदित कवियों को खुलकर बात रखने का अवसर मिला, तो उन्होंने विभिन्न मुद्दों पर बेबाक तरीके से रचना-पाठ किया।

कवि-सम्मेलन में विभिन्न शहरों-कस्बों से औरंगाबाद में बसे लगभग दो दर्जन कवियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, साथ ही मराठी कवियों ने भी हिंदी में रचना पाठ किया। कार्यक्रम में डॉ. जाधव के काव्य संकलन 'दुनिया का दस्तूर' और साबिर खान कृत उपन्यास 'कबीर-जस्ट अ नेम' का लोकार्पण किया गया।

कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता कवि डॉ. वलभीमराज गोरे ने की। आपको महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिलने पर और विनायकराव पाटिल महाविद्यालय, वैजापुर के डॉ. बलिराम धापसे को प्रोफ़ेसर बनने पर सम्मानित किया गया। हिंदी प्रचार सभा के अध्यक्ष चंद्रदेव कवड़े ने नए रचनाकारों को सभा से जुड़ने की अपील की।

कवि-सम्मेलन की प्रस्तावना डॉ. गोविंद बुरसे ने रखी। कार्यक्रम में सभा के मंत्री डॉ. नारायण वाकले, योगेश निकम, कैलाश गौतम, निवृत्ति दाभाड़े और महाराष्ट्र हिंदी विद्यालय के कर्मचारियों का सराहनीय सहयोग रहा। संचालन कवयित्री मोहिते ने किया। आभार-ज्ञापन सभा के अध्यक्ष डॉ. शिवप्रसाद लाहोटी ने किया।

साभार : लोकमत समाचार

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र की 66वीं जयंती एवं कवि-सम्मेलन

4 दिसम्बर, 2019 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र की 66वीं जयंती पर एक

समारोह और कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। डॉ. सुलभ ने कहा कि बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् की पूर्व निदेशिका और विदुषी लेखिका डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र हिंदी और संस्कृत ही नहीं, पालि, प्राकृत एवं दक्षिण भारत की अनेक भाषाओं का प्रचुर ज्ञान रखती थीं। एक तपस्विनी की भाँति उन्होंने भारतीय भाषाओं की साधना की। कम आयु में ही उन्हें वैधव्य का दुख झेलना पड़ा। किंतु जीवन के कठोर अनुभवों और पीड़ा से उन्होंने सृजन के उपकरण तैयार किए। जीवन-पर्यन्त उन्होंने केवल साहित्य-व्रत निभाया। उत्तर प्रदेश की होकर भी वे बिहार की होकर रहीं।

मिथिलेश जी अपनी विद्वता के कारण संपूर्ण भारतवर्ष में साहित्य-मनीषियों में लोकप्रिय थीं। दक्षिण भारत में उनका विशेष सम्मान था।

समारोह का उद्घाटन सुप्रसिद्ध विद्वान और भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अमरनाथ सिन्हा ने किया।

सम्मेलन के साहित्य मंत्री डॉ. शिववंश पांडेय ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। मिथिला विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. रत्नेश्वर मिश्र ने भी डॉ. मिथिलेश के साथ के अपने अनुभवों को साझा किया। सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेंद्र नाथ गुप्त, डॉ. शंकर प्रसाद, डॉ. मधु वर्मा, डॉ. मुकेश कुमार झा, श्रीकांत सत्यदर्शी तथा श्रद्धा कुमारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित कवि-गोष्ठी का आरंभ कवयित्री चंदा मिश्र की वाणी-वंदना से हुआ। वरिष्ठ कवि मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश', कवयित्री डॉ. सुलक्ष्मी कुमारी, शायरा तलत परवीन, वरिष्ठ कवयित्री डॉ. सुधा सिन्हा, राज कुमार प्रेमी, माधुरी भट्ट, डॉ. रमाकांत पाण्डेय, संजू शरण, जय प्रकाश पुजारी, इन्दु उपाध्याय, डॉ. विनय कुमार विष्णुपुरी, प्रो शकुंतला मिश्र, डॉ. मनोज गोवर्धनपुरी, अरुण कुमार श्रीवास्तव, अंकेश कुमार और पूर्णिमा श्रीवास्तव ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। मंच का संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

श्री अनिल सुलभ की रिपोर्ट

बिहार में डॉ. कुमार विमल जयंती एवं कवि-सम्मेलन

11 अक्तूबर, 2019 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में डॉ. कुमार विमल की जयंती के अवसर पर एक समारोह एवं कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। समारोह का उद्घाटन पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एस.एन.पी. सिन्हा ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में सम्मेलन के प्रधान मंत्री डॉ. शिववंश पाण्डेय ने स्वागत-भाषण दिया।

डॉ. सुलभ ने अपने उद्बोधन में कहा कि *"हिंदी साहित्य के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान रखने वाले विद्वान समालोचक डॉ. कुमार विमल काव्य में सौंदर्य-शास्त्र के महान आचार्य थे। अपने समय के वे एक जीवित साहित्य-कोश थे। उनका संपूर्ण जीवन साहित्य और पुस्तकों के साथ अहर्निश जुड़ा रहा। वे प्रायः पुस्तकों से घिरे और लिखते-पढ़ते ही देखे जाते थे। उनका जीवन साहित्य का पर्यायवाची था। समालोचना के क्षेत्र में आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के बाद डॉ. कुमार विमल का नाम सर्वाधिक आदर से लिया जाता है।"*

सम्मेलन के उपाध्यक्ष नृपेन्द्रनाथ गुप्त, डॉ. मधु वर्मा, डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह, प्रो. भूपेन्द्र कलसी, डॉ. नागेश्वर प्रसाद यादव, श्रीकांत सत्यदर्शी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन का आरंभ चंदा मिश्र द्वारा वाणी-वंदना से हुआ। उपस्थित रचनाकारों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया। मंच-संचालन योगेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्णरंजन सिंह ने किया।

श्री अनिल सुलभ की रिपोर्ट

भोपाल में कम्प्यूटर व मोबाइल पर भारतीय भाषाओं में कार्य करने हेतु कार्यशाला

14 दिसंबर, 2019 को हिंदी भवन, भोपाल में 'कम्प्यूटर एवं मोबाइल में कार्य करने की सुविधाओं के लिए' कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में टेक्नोक्रेट एवं तकनीकी विषयों के वरिष्ठ लेखक रवि रतलामी उपस्थित थे।

कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के मंत्री संचालक श्री कैलाशचंद पन्त ने लेखकों एवं साहित्यकारों को कम्प्यूटर एवं मोबाइल पर हिंदी में कार्य करने के प्रशिक्षण देने की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि भारतीय दर्शन और परम्परा को यूरोपीय देशों तक पहुँचाने के लिये तकनीकी का प्रशिक्षण आवश्यक हो गया है।

इस अवसर पर रवि रतलामी ने कहा *"कम्प्यूटर व मोबाइल पर भारतीय भाषाओं में कार्य करना बेहद आसान हो गया है। अब हम अपनी रचनाओं को वेब के माध्यम से पूरी दुनिया में पहुँचा सकते हैं"।*

कार्यशाला में विषय प्रवर्तन करते हुए हिंदी भवन के निदेशक डॉ. जवाहर कर्नावट ने सूचना पद्धति में हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विकास पर विस्तार से प्रकाश डाला। तकनीकी प्रशिक्षक सोमेन्द्र यादव ने प्ले स्टोर पर जाकर इन्स्क्रिप्ट डाउनलोड करना सिखाया एवं भाषा इंडिया डॉट कॉम पर उपलब्ध तकनीकी सामग्रियों के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. रंजना अरगड़े ने इंटरनेट पर हिंदी साहित्य की सामग्रियों की कमी को रेखांकित करते हुए

युवा मंच के तहत इस आयोजन के रूप में किए गए सार्थक प्रयास की तारीफ़ की। आपने शोध कार्य में नई भाषा प्रौद्योगिकी की उपयोगिता को भी रेखांकित किया। युवा मंच की संयोजिका निशा सिंह ने भी अतिथियों को सम्बोधित किया। अंत में श्रीमती कान्ता रॉय ने आभार प्रदर्शन किया। इस कार्यशाला में विद्यार्थियों एवं लेखकों ने बड़ी संख्या में भागीदारी करते हुए इस कार्यशाला को अत्यन्त उपयोगी बताया।

कान्ता रॉय, प्रशासनिक अधिकारी, मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की रिपोर्ट

दिल्ली में 'हिंदी और रोज़गार' पर व्याख्यान

18 अक्तूबर, 2019 को दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध 'शहीद भगतसिंह महाविद्यालय' के हिंदी विभाग ने 'हिंदी और रोज़गार' विषय पर एक वृहत संगोष्ठी आयोजित की।

प्रखर विद्वान हमनाम मित्र डॉक्टर हरीश अरोड़ा और हरीश नवल प्रमुख वक्ता थे।

प्राचार्य डॉक्टर अनिल कुमार सरदाना एवं विभाग प्रभारी डॉक्टर मीणा द्वारा संयोजित इस संगोष्ठी में भारी संख्या में विद्यार्थियों ने सक्रिय भाग लिया।

डॉक्टर हरीश अरोड़ा ने मुख्यतः मीडिया संदर्भित रोज़गारों की प्रभावी व्याख्या की।

हरीश नवल ने 'हिंदी में रोज़गार के अवसर भारत और भारत के बाहर जहाँ-जहाँ हैं' को विस्तार से और अपने स्वयं के अनुभवों से बताया। इसके अंतर्गत प्रश्नोत्तर भी हुए और चर्चा भी जिससे वातावरण बहुत जीवंत, सुखद और उद्देश्यपूर्ण रहा।

हरीश नवल की रिपोर्ट

दो दिवसीय गाज़ियाबाद महोत्सव

12-13 अक्तूबर, 2019 को राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास एवं भागीरथ सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में '27वाँ अ. भा. हिंदी साहित्य सम्मेलन' 'गाज़ियाबाद महोत्सव' के रूप में आयोजित किया गया। भागीरथ पब्लिक स्कूल सभागार में दो दिन चले इस समारोह में पहले दिन पत्रिका व पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ। प्रदर्शनी में देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पत्रिकाओं के साथ-साथ विभिन्न लेखकों की नवीनतम पुस्तकें प्रदर्शित की गईं।

उद्घाटन सत्र में गाज़ियाबाद के संदर्भ में तथा पिछले 26 वर्षों से यहाँ की साहित्यिक-सांस्कृतिक छवि को विकसित करने में सहायक इस वार्षिक आयोजन के विविध पक्षों पर चर्चा हुई। इस सत्र में सर्वश्री कृष्ण मिश्र, श्री राजकुमार सचान 'होरी', श्री अशोक श्रीवास्तव, श्री विजयपाल वघेल, श्री अमिताभ सुकुल आदि ने गाज़ियाबाद के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में 'आपातकाल की साहित्य सर्जना' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। उपस्थित विद्वानों ने अपने विचार एवं आलेख प्रस्तुत किए।

सांस्कृतिक संध्या में बेंगलूर से आई ईशानी शेषन ने दुर्गा स्तुति नृत्य प्रस्तुत किया। काव्य निशा में उपस्थित कवियों ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया।

दूसरे दिन प्रथम सत्र में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में राष्ट्र-चेतना' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। उपस्थित विद्वानों ने अपने विचार एवं आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में 11 पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, जिनमें 'कहानियाँ जो मुस्कान ला दें', 'कृष्ण की कथा', 'समय के साथ', 'उपन्यास में समय', 'उत्तराधिकारी', 'बिखरे मोती', 'फूल-फूल मकरंद, 'सुरों की गूँज', 'नई दिशाएँ' सहित रमेश कटारिया द्वारा संपादित 3 संकलन शामिल हैं। इस अवसर पर चुने हुए 25 विद्वानों को सम्मानित भी किया गया। लोकार्पण एवं अलंकरण उ.प्र. सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री माननीय श्री अतुल गर्ग, पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि, पद्मश्री मोहन स्वरूप भाटिया, श्री राजीव पाल व अन्य मंचस्थ अतिथियों ने किया। राष्ट्रगान के साथ दो दिवसीय सम्मेलन का समापन हुआ। दोनों दिवसों के कार्यक्रमों का संचालन मुख्य संयोजक उमाशंकर मिश्र ने किया तथा भागीरथ सेवा संस्थान के सचिव अमिताभ शुक्ल ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

आभार : यू.एस.एम. पत्रिका

भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान छलेसर आगरा द्वारा राजभाषा चेतना मास एवं हिंदी महोत्सव

14 अक्तूबर, 2019 को छलेसर के भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान द्वारा हिंदी चेतना मास, काव्य पाठ एवं पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य महोत्सव संपन्न हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ. श्रवण कुमार दुबे ने पधारे हुए महानुभावों, विद्वानों और अधिकारियों का स्वागत किया। आगरा नगर राजभाषा समिति के निवर्तमान सचिव डॉ. आर.एस. तिवारी शिखरेश ने कार्यक्रम के संचालन का दायित्व संभाला।

सर्वप्रथम आगरा के टेलिकॉम कार्यालय की राजभाषा अधिकारी ने राजभाषा नीति पर अपने विचार प्रकट किए। तत्पश्चात् राजा बलवंत सिंह कॉलिज की पूर्व प्रिंसिपल डॉ. सुषमा सिंह ने अपनी सारगर्भित और समाज से सरोकारी क्षणिकाएँ प्रस्तुत कीं, जिनमें 'रिश्ते' क्षणिका ने सबका ध्यान आकर्षित किया।

डॉ. यशोधरा यश ने 'बचपन' कविता का गायन किया। अछनेरा के स्टेशन मास्टर श्री कामेश जी ने गीत सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद्, नई दिल्ली के क्षेत्रीय प्रतिनिधि एवं कर्मचारी, राज्य बीमा के पूर्व संयुक्त निदेशक श्री क्षेत्रपाल शर्मा ने अपनी कविता का गायन किया। डॉ. शैलेन्द्र वशिष्ठ ने राष्ट्रीय गीत एवं सांस्कृतिक गीत श्रीराम के ऊपर प्रस्तुत किया। संस्कृति के संवर्धन के लिए डॉ. शेखर एस. एवं श्री राम सहाय शर्मा ने भी अपनी कविताएँ पढ़ीं। अंत में हिंदी प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

साभार : हिंदीकुंज.कॉम

भोपाल में विश्व रंग - साहित्य और कला महोत्सव 2019

4 से 10 नवम्बर, 2019 को रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय द्वारा मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में तीन अलग-अलग स्थानों पर (मिन्टो हॉल, भारत-भवन, रविन्द्र भवन) विश्व रंग - साहित्य और कला महोत्सव का आयोजन किया गया। इस साहित्य और कला के मंच ने भारत में एक नया समाँ बाँध दिया था। रविन्द्र संगीत, चंडालिका नामक नृत्य नाटिका का मंचन, चित्र-मुखौटा प्रदर्शनी, कई वाद्य यंत्रों का वादन-प्रदर्शन, हिंदी व अन्य कई भाषाओं में काव्य-पाठ, लेखक-कवि से बातचीत, लोकनृत्य, आदिवासी नृत्य, नाटक, ध्रुपद गायन, थर्ड जेंडर कवियों की रचनाओं का पाठ, प्रवासी साहित्य पर चर्चा, हिंदी एक विदेशी भाषा के रूप में विषय पर संगोष्ठी, प्रवासी कवियों का कविता-पाठ, मुशायरा, आदि का आयोजन किया गया। अर्थात् साहित्य और कला की शायद ही कोई विधा इस विश्व रंग से अछूती रह गई हो। इस आयोजन की शुरुआत महीनों पहले ही शुरू हो गई थी। 'किताबें बातें करती हैं' तथा अन्य कई कार्यक्रम श्री संतोष चौबे जी (रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के संस्थापक और विश्व रंग के जनक) ने महीनों पहले आरम्भ करवा दिए थे। नवम्बर के 7 दिनों में भी 70 से अधिक अलग-अलग सत्र आयोजित हुए जो अभूतपूर्व था।

इस आयोजन के साथ ही 9 नवम्बर को भोपाल के 'पब्लिक रिलेशन सोसाइटी' द्वारा प्रवासी साहित्य सम्मान और साहित्य सम्मान का आयोजन भी हुआ, जिसमें प्रवासी साहित्यकारों को तथा भारत के पुरोधाओं को सम्मानित किया गया। गर्भनाल पत्रिका के वीडियो संस्करण का भी उद्घाटन इस अवसर पर हुआ, जो भविष्य में हिंदी को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। गर्भनाल पत्रिका के संस्थापक श्री आत्माराम शर्मा की भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने हिंदी के विदेशी भाषी शिक्षकों को इतनी बड़ी संख्या में इस महोत्सव से जोड़ा, जो हिंदी को विश्वमंच की ओर ले जाने की एक कड़ी है।

डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट

दक्षिण अफ़्रीका में हिंदवाणी की 21वीं वर्षगाँठ

1998 में क्वा ज़ुलु नेटल में एफ़.एम. फ्रीक्वेंसी एयरवेव्स में काफ़ी बदलाव आया। पहली बार एक समर्पित हिंदी रेडियो स्टेशन रेडियो की दुनिया में छा गया। यह पहल हिंदी शिक्षा संघ की एक परियोजना थी और श्री ज्ञान परसो उस समय प्रधान थे। यह परियोजना सतीश बालगोबिंद और रामू गोपीलाल द्वारा संचालित की गई थी। सतीश बालगोबिंद ने सामान्य प्रबंधन का ध्यान रखा, जबकि रामू गोपीलाल ने तकनीकी प्रबंधन का। डॉ. आर. हेमराज भी 'हिंदवाणी' के प्रारंभिक वर्षों में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे। रॉबिन बिंदाप्रसाद ने 'हिंदवाणी' का नाम रखा था, जिसका अर्थ है 'हिंदी की आवाज़'। काशीप्रसाद पट्टुन्दीन ने वित्तीय सहायता प्रदान की। 'हिंदवाणी' हिंदी शिक्षा संघ द्वारा संचालित है। यह एक 24 घंटे रेडियो स्टेशन है, जिसमें हिंदी भाषा प्रमुख रूप से प्रयोग में लाई जाती है। यह समुदाय का अभिन्न अंग बन गया है। कई बार 30-दिवसीय लाइसेंस पर काम चलाने के बाद 2004 में हिंदवाणी को अपना पहला 4 साल का लाइसेंस मिला था। यह बड़ी चुनौती थी, जिसका बखूबी सामना किया गया। 21 साल बाद भी स्वयंसेवकों द्वारा चालित हिंदवाणी अद्भुत समर्पण और दृढ़ विश्वास के साथ खड़ा है। 2019 में हिंदवाणी की 21वीं वर्षगाँठ मनाई गई।

साभार : हिंदी खबर, हिंदी शिक्षा संघ, अक्तूबर 2019, अंक 86

महामना और अटल जी को काव्यांजलि

25 दिसंबर 2019 को महामना मदन मोहन मालवीय जी और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती पर विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा एक समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की।

कार्यक्रम की शुरुआत ईसा मसीह, मदन मोहन मालवीय और अटल बिहारी वाजपेयी के चित्रों पर माल्यार्पण के साथ हुई। उसके बाद मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपाशंकर चौबे ने विषय प्रवर्तन किया। तदुपरांत श्रीबड़ाबाजार कुमार सभा पुस्तकालय, कोलकाता में हुए अटल बिहारी वाजपेयी के एकल काव्यपाठ की वीडियो प्रस्तुति की गयी। कुलपति प्रो. शुक्ल ने मालवीय जी और अटल जी को अपनी काव्यांजलि अर्पित की। वैदिक ज्ञान परंपरा के आचार्य और दर्शनशास्त्री के रूप में पूरे देश में प्रतिष्ठित प्रो. शुक्ल ने सार्वजनिक मंच से पहली बार अपनी कविताओं का पाठ किया।

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि *"भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी दोनों राजनेता हिंदी के अप्रतिम हिमायती थे। मालवीय जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी में उच्च शिक्षण आरंभ कराया, तो वहीं अटल जी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को स्थापित किया। इन दोनों हिंदी हिमायती महान विभूतियों को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हुए हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी सेवा में निरंतर अग्रसर है।"*

कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋषभ मिश्र ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. के. के. सिंह ने किया। समारोह में प्रतिकुलपति द्वय डॉ. चंद्रकांत रागीट, प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल समेत भारी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

टी. यू. एफ़. एस. तोक्यो, जापान में 'बापू की रोशनी' नाटक का मंचन

10 जनवरी, 2020 को जापान की राजधानी तोक्यो स्थित तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के हिंदी विभाग के विद्यार्थियों द्वारा महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित 'बापू की रोशनी' लघु नाटक का मंचन किया गया। यह नाटक बापू के जीवन से सम्बद्ध तीन घटनाओं पर आधारित है। प्रथम, घटना में मोहनदास करमचंद गांधी एक वकील की भूमिका में दक्षिण अफ़्रीका जाते हैं और वहाँ दो भारतीय मुस्लिम व्यापारियों अब्दुला सेठ और तैयब सेठ के बीच चल रहे मुकदमे में समझौता कराते हैं। दूसरे में वे बिहार में हिंसा और बलि प्रथा के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर रहे हैं और तीसरी घटना में वे पश्चिम बंगाल में सादगी को अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बताते हैं।

इस अवसर पर जापान में भारत के राजदूत महामहिम श्री संजय वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अपने वक्तव्य में उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए सत्य एवं अहिंसा को अपने जीवन का अंग बनाने और निरंतर मेहनत करते रहने की बात कही। उन्होंने महात्मा गांधी के मूल्यों को आज के लिए अति प्रासंगिक बताया। हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. ताकेशि फ़ुजिइ ने विश्वविद्यालय के 111 वर्ष पुराने अपने हिंदी विभाग का परिचय देते हुए बताया कि द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा इस प्रकार के नाटक का मंचन हर वर्ष किया जाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण आयोजन होता है। प्रो. फ़ुजिइ द्वारा पुष्पगुच्छ प्रदान कर महामहिम श्री संजय वर्मा और विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक प्रो. सिद्धार्थ सिंह का सम्मान किया गया। अन्य अतिथियों में एन. एच. के. आकाशवाणी, तोक्यो से श्री चिन्मय दीक्षित एवं डॉ. संतोष पाण्डेय, प्रो. योशिफ़ुमी मिज़ुनो आदि विद्वान उपस्थित थे। हिंदी विभाग से सम्बद्ध डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए नाटक में सहभागी विद्यार्थियों की मेहनत की प्रशंसा की।

डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय की रिपोर्ट

गौटेंग, दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी दिवस 2019 का आयोजन

12 अक्तूबर, 2019 को हिंदी शिक्षा संघ, गौटेंग ने इंटरनेशनल सोसायटी फ़ॉर कृष्णा कॉन्स्यसनेस, मिडरान्द में हिंदी दिवस का आयोजन किया। आयोजन में जोहान्सबर्ग के भारतीय वाणिज्य दूतावास, स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, जोहान्सबर्ग तथा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का भरपूर सहयोग मिला। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में जोहान्सबर्ग के भारतीय वाणिज्य दूतावास के शिक्षा एवं संस्कृति निदेशक श्री बलवन्त ठाकुर उपस्थित थे। उन्होंने विश्व भाषाओं की चर्चा करते हुए हिंदी के महत्त्व पर बात की। श्रीमती माया भट्ट एवं श्रीमती ओमिला सलिक ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर मिडरान्द हिंदी पाठशाला, चमकते सितारे हिंदी पाठशाला, प्रविष्का स्कूल ऑफ़ डांस, स्प्रिंग्स हिंदी पाठशाला, संगीत गुरु श्री पं. संजय मलिक तथा भारतीय दूतावास कार्यालय ने प्रतिभागिता दी। श्रीमती शशि सरदार ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : हिंदी खबर, हिंदी शिक्षा संघ, अक्तूबर 2019, अंक 86

सिंगापुर में हिंदी दिवस 2019

14 सितंबर, 2019 को संगम सिंगापुर संस्था ने भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर के हिंदी विभाग और सेंटर फ़ॉर लैंग्वेज स्टडी के सहयोग से इंडियन हेरिटेज सेंटर में हिंदी दिवस का सफल आयोजन किया। इसमें हर वर्ग के लोगों की भागीदारी रही। कविता-वाचन, स्वरचित कविता-वाचन, साहित्य, भाषा और भारत तथा हिंदी में आधिकारिक शब्द से संबंधित प्रश्नोत्तरी, छात्र वर्ग और वयस्क वर्ग के लिए वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा 'क्षणिकाएँ-बस दो मिनट' जैसी प्रतियोगिताओं के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संवाद-नाटिका, दोहे-वाचन आदि का आयोजन किया गया। तकनीकी को हिंदी भाषा से जोड़ने और प्रस्तुत करने के लिए कुछ ऐसे खेल हुए, जिन्हें कक्षा में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। श्री निनाद देशपांडे जी ने भाषा के सरल रूप और तकनीकी के प्रयोग पर ज़ोर दिया और पुरस्कार-वितरण कर छात्रों और समुदाय का हौसला बढ़ाया। इस अवसर पर वन्दना देव शुक्ल के कथा-संग्रह 'का घर का परदेस' तथा नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. संध्या सिंह और हिंदी प्रवक्ता श्रीमती साधना पाठक की पुस्तक *'An Introduction to Hindi-Elementary Level'* और *'An Introduction to Hindi-Intermediate Level'* का लोकार्पण श्री निनाद देशपांडे के कर-कमलों से हुआ। लगभग सवा सौ लोगों ने इस आयोजन में भाग लिया। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर के हिंदी विभाग और सेंटर फ़ॉर लैंग्वेज स्टडी के छात्रों ने आयोजन में बड़ी भूमिका निभाई और चीनी छात्रों की प्रतिभागिता से कार्यक्रम में एक नया रंग आ गया।

डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट

लोकार्पण

नई दिल्ली में 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' का लोकार्पण

18 अगस्त 2019 को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय की किताब 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' का लोकार्पण हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय मंत्री माननीया श्रीमती स्मृति ईरानी और विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफ़ेसर नरेन्द्र कोहली मौजूद रहे। लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीया श्रीमती स्मृति ईरानी ने कहा कि *"लेखक अनंत विजय ने विविध विषयों को छूते हुए मार्क्सवाद का जो अर्धसत्य लिखा है, वह निश्चित ही पठनीय है। इस पुस्तक का अनुवाद अंग्रेज़ी के अलावा जितनी भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होगा, उतना ही भारतीय लोकतंत्र के लिए लाभदायी होगा।"* पुस्तक लोकार्पण की औपचारिकता के बाद परिचर्चा-सत्र आयोजित हुआ, जिसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. नरेंद्र कोहली उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि वे आलोचक नहीं हैं, लेकिन वर्षों बाद उन्होंने किसी पुस्तक को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। "मार्क्सवाद का अर्धसत्य" पढ़ते हुए उन्हें लगा कि लेखक ने अर्धसत्य नहीं, बल्कि पूर्ण सत्य को बहुत ही साहस और बेबाकी के साथ उजागर किया है।

साभार : हिन्दुस्थान समाचार

दिल्ली में काव्य एवं ग़ज़ल संग्रह 'धूप को निचोड़कर' का लोकार्पण

11 अगस्त, 2019 को हिंदी भवन दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित डॉ.

संजीव दीक्षित 'बेकल' कृत काव्य एवं ग़ज़ल संग्रह 'धूप को निचोड़कर' का भव्य लोकार्पण सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि रचनाकार श्री राजेश्वर वशिष्ठ रहे और विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ रचनाकार श्री नरेश शांडिल्य एवं वरिष्ठ कवि एवं समीक्षक श्री प्रदीप अग्रवाल 'प्रदीप्त' रहे। पुस्तक-लोकार्पणके भव्य एवं सफल आयोजन के पश्चात् कार्यक्रम में उपस्थित वरिष्ठ एवं युवा कवियों ने बहुत ही सुंदर एवं अलौकिक काव्य एवं ग़ज़ल पाठ किया। डॉ. संजीव दीक्षित 'बेकल' ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। कार्यक्रम का सुंदर संचालन पुस्तक के आवरण की चित्रकार श्रीमती शैलजा जैन ने किया।

साभार : डॉ. संजीव दीक्षित का फ़ेसबुक पृष्ठ

लखनऊ में आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह ग्रंथावली विमोचन समारोह

2 नवम्बर, 2019 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति के तत्वावधान में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के मालवीय सभागार में 'आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह ग्रंथावली' विमोचन समारोह सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 350 से ज़्यादा साहित्यकार, शिक्षाविद्, न्यायविद्, साहित्य प्रेमी व शोधार्थी उपस्थित रहे। इस अवसर पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित की गयी, जिसका विषय 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा तथा आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की काव्य साहित्य साधना' था।

कार्यक्रम को 4 सत्रों में बाँटा गया। प्रथम सत्र में उद्घाटन तथा ग्रन्थावली का विमोचन किया गया। इस सत्र के मुख्य अतिथि उच्च न्यायालय इलाहाबाद के न्यायमूर्ति माननीय पंकज मित्तल थे तथा अध्यक्षता न्यायमूर्ति माननीय श्री अताउर्रहमान मसूदी ने की। सर्वश्री प्रो. कन्हैया सिंह, प्रख्यात पत्रकार के. विक्रम राव, पद्मभूषण श्री नारायण सिंह भाटी, प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, डॉ. रवि प्रकाश सिंह, प्रो. शिवमोहन सिंह एवं प्रो. रामकठिन सिंह मंचासीन थे। समारोह का शुभारम्भ दीप-प्रज्वलन तथा माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि से हुआ।

गण्यमान्य अतिथियों का संबोधन हुआ तथा अंत में अन्तरराष्ट्रीय हिंदी समिति के संस्थापक संरक्षक तथा ग्रन्थावली के प्रबन्ध संपादक प्रख्यात मनोचिकित्सक डॉ. रवि प्रकाश सिंह ने अतिथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

आभार : अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति, लखनऊ

नई दिल्ली में 'धरती कहे पुकार के : गीतकार शैलेंद्र' का लोकार्पण

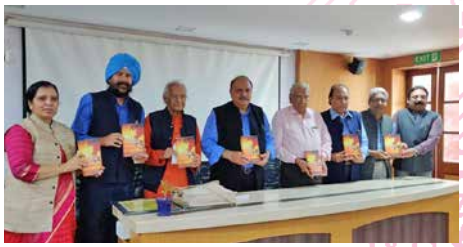

5 नवंबर, 2019 को हंसराज कॉलिज, नई दिल्ली में श्री इंद्रजीत सिंह के संपादन में गीतकार शैलेंद्र पर केंद्रित 'धरती कहे पुकार के : गीतकार शैलेंद्र' पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। ध्यातव्य

है कि प्रसिद्ध गीत 'आवारा हूँ, गर्दिश में हूँ, आसमान का तारा हूँ, आवारा हूँ' गीतकार शैलेंद्र का है।

मंच पर साहित्य और सिनेमा के एक से एक जानकार मंचासीन थे। प्रसिद्ध कथाकार श्री तेजेंद्र शर्मा, सुप्रसिद्ध कवि नरेश सक्सेना, वरिष्ठतम लेखक एवं गीतकार शैलेंद्र के अभिन्न मित्र डॉ. अरविंद कुमार, के. के. बिरला फ़ाउंडेशन के निदेशक एवं सुप्रसिद्ध कवि सुरेश ऋतुपर्ण एवं जे.एन.यू. के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर डॉ. गोविंद उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम के माध्यम से गीतकार शैलेंद्र के कई नए आयाम और संस्मरण जानने और सुनने को मिले। विशेषकर 'तीसरी कसम' फ़िल्म के निर्माण से संबंधित परेशानियों के बारे में जानने को मिला।

डॉ. आशीष कंधवे की रिपोर्ट

गाज़ियाबाद में काव्य संध्या व पुस्तक विमोचन कार्यक्रम

20 अक्तूबर, 2020 को साहिबाबाद

श्याम पार्क एक्सटेंशन में स्थित लालचंद विद्यालय में दुलारी सामाजिक सेवा समिति का दीपावली उत्सव मनाया गया, जिसमें अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, ट्रांस हिंडन द्वारा काव्य संध्या का सुंदर आयोजन किया गया। कवि पीयूष कांति और लेखिका मीनाक्षी शर्मा के सुंदर संचालन में बच्चों के साथ-साथ देश के जाने माने कवियों द्वारा कविता-पाठ हुआ। साथ ही दुलारी सामाजिक सेवा समिति की संस्थापक मीनाक्षी शर्मा की पुस्तक 'मैं कुछ कहूँ' का लोकार्पण किया गया। मीनाक्षी शर्मा की यह पुस्तक महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर आधारित है कि कैसे आज हर क्षेत्र में नाम कमाने वाली स्त्री समाज की सोच में वहीं पर खड़ी है जहाँ सालों पहले थी।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित गाज़ियाबाद महापौर श्रीमती आशा शर्मा द्वारा दीप-प्रज्वलन से हुई। उसके बाद सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। तत्पश्चात् पुस्तक का लोकार्पण गाज़ियाबाद महापौर आशा शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार सलामत मियाँ, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् मेरठ प्रांत के संयुक्त महासचिव कवि चेतन आनंद, लेखक व पत्रकार डॉ. अमित चन्ना, समाजसेवी परविंदर सिंह पंकज, दुलारी समिति की अध्यक्षा राधिका शर्मा, प्रकाशक पराग कौशिक के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार बी. के. वर्मा शैदी ने की। कार्यक्रम का समापन सभी ने दीपावली की शुभकामना देकर किया।

साभार : फ़्यूचर लाईन टाईम्स

गाज़ियाबाद में 'कविता के बहाने' का लोकार्पण

22 अक्तूबर, 2019 को मोहन नगर, गाज़ियाबाद स्थित आई.टी.एस. कॉलिज के सभागार में परिन्दे प्रकाशन द्वारा प्रकाशित श्री विलास सिंह की पुस्तक 'कविता के बहाने' का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात कवि, कथाकार, आलोचक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने की। काव्य-संग्रह में पेड़, पहाड़, नदी, गौरैयों और गिद्धों के माध्यम से पर्यावरण और प्रकृति से जुड़ी चिंताओं की चर्चा है। महिला सुरक्षा और महिलाओं के प्रति समाज के रूढ़िवादी और पितृसत्तात्मक रवैए की पड़ताल भी इस संग्रह की कविताओं में की गई है। वरिष्ठ कवि श्री लीलाधर मंडलोई, श्री मदन कश्यप, प्रो. देवशंकर नवीन व श्रीमती अलका सिन्हा ने संग्रह पर अपनी समीक्षात्मक राय प्रस्तुत की और काव्य-संग्रह को एक सार्थक उपलब्धि बताया। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रवीण कुमार ने किया।

साभार : लोकमत हिन्दी

कनाडा में 'इंदीवर' का विमोचन

22 अक्टूबर, 2019 को हिंदी राइटर्स गिल्ड द्वारा प्रकाशित एक और महत्त्वपूर्ण काव्य पुस्तक 'इंदीवर' का विमोचन किया गया। 'इंदीवर' डॉक्टर शिवनंदन सिंह यादव की तीसरी पुस्तक है। इससे पूर्व उनके दो और काव्य-ग्रंथों का प्रकाशन 'चन्दन वन' तथा 'प्रियंवदा' नाम से हो चुका था। इंदीवर के काव्य-संयोजन, टंकण तथा सम्पादन का कार्य श्री सुमन कुमार घई ने दक्षतापूर्वक किया। अस्वस्थता के कारण डॉक्टर यादव हिंदी राइटर्स गिल्ड की मासिक सभा में जाने के लिए असमर्थ थे, अतः यह कार्यक्रम श्री अरुण बर्मन तथा श्रीमती आशा बर्मन के निवास पर संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीमती शैलजा सक्सेना, श्री सुमन कुमार घई, श्री विजय विक्रांत, श्रीमती कांता विक्रांत, श्री सौभाग्य सिंघवी, श्रीमती स्नेह सिंघवी, श्रीमती शैल शर्मा, श्रीमती अरुणा भटनागर, श्रीमती इंदिरा वर्मा, श्री राज माहेश्वरी, श्रीमती मीना माहेश्वरी, श्री अजय बर्मन, श्रीमती रेखा बर्मन, श्री अरुण बर्मन तथा श्रीमती आशा बर्मन उपस्थित थे।

श्रीमती आशा बर्मन ने मुख्य अतिथि डॉक्टर साहब का स्वागत करते हुए उन्हें उनकी तीसरी पुस्तक के प्रकाशन पर बधाई दी। उन्होंने डॉक्टर साहब से संबंधित पुरानी स्मृतियों को साझा किया। आठवें दशक से ही वे टोरंटो में हिंदी के रचनात्मक कार्यों से जुड़े हुए हैं।

शैल जी ने आठवें दशक के कवियों को लेकर एक स्वरचित रोचक कविता पढ़कर सबका मनोरंजन किया। टोरंटो की सम्मानित कवयित्री श्रीमती अचला दीप्ति कुमार ने भी डॉक्टर साहब के लिए एक शुभकामनाओं से भरी कविता विनीपेग से फ़ोन पर सुनाकर सबके साथ साझा की। श्री राज माहेश्वरी ने भी डॉक्टर यादव को एक स्वरचित कविता भेंट की। श्रीमती शैलजा सक्सेना, श्री सुमन कुमार घई, श्री विजय विक्रांत, श्रीमती अरुणा भटनागर और श्रीमती इंदिरा वर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। डॉक्टर यादव ने सबके अनुरोध पर अपनी कुछ रचनाएँ पढ़ीं तथा इतने सुन्दर आयोजन के लिए सबको धन्यवाद दिया।

आशा बर्मन की रिपोर्ट
साभार : हिन्दी राइटर्स गिल्ड

उज्जैन में 'गांधीजी का आध्यात्मिक मानवतावाद' का लोकार्पण

2 अक्टूबर, 2019 को उज्जैन के कालिदास अकादमी के अभिरंग नाट्यगृह में महाकाल की पावन धरती और गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित लोकार्पण समारोह में डॉ. प्रवीण जोशी द्वारा लिखित पुस्तक 'गांधीजी का आध्यात्मिक मानवतावाद' का लोकार्पण हुआ।

मुख्य अतिथि के रूप में पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और संस्कृत के विद्वान डॉ. मोहन गुप्त उपस्थित थे। अध्यक्षता उज्जैन के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शिव चौरसिया ने की। इस अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. शर्मा भी उपस्थित थे।

सारस्वत अतिथि के रूप में डॉ. आशीष कंधवे को आमंत्रित किया गया था तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में जाने-माने शिक्षाविद बृजकिशोर शर्मा मंच पर उपस्थित थे।

पुस्तक पर चर्चा के लिए मंच पर उपस्थित थे डॉ. पिलकेंद्र अरोड़ा, जो इस क्षेत्र के बहुत ही लोकप्रिय व्यंग्यकार हैं और एक अच्छे समीक्षक भी।

इस कार्यक्रम का चिंतनशील संचालन पंडित डॉ. सदानंद त्रिपाठी ने किया।

साभार : डॉ. आशीष कंधवे का फ़ेसबुक पृष्ठ

दिल्ली में 'काव्यांकुर 7' पुस्तक का लोकार्पण

2 अक्टूबर, 2019 को 'इंडिया हेबीटेट सेन्टर' लोदी रोड, नई दिल्ली के गुलमोहर सभागार में देश के वरिष्ठ कवियों और साहित्यकारों की उपस्थिति में देश के नव-कलमकारों को कविता के क्षेत्र में प्रोत्साहन हेतु समर्पित संस्था 'नवांकुर साहित्य सभा', दिल्ली के नवांकुरों के लिए प्रकाशित पुस्तक श्रृंखला की सातवीं पुस्तक 'काव्यांकुर 7' का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदुस्तान के वरिष्ठतम कवि एवं साहित्यकार श्री बाल स्वरूप 'राही' ने की। मुख्य अतिथि आकाशवाणी के पूर्व उपमहानिदेशक तथा कवि श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, दोहाकार श्री नरेश शांडिल्य, श्रीमती अलका सिन्हा, श्री रामचरण सिंह साथी एवं मो. मुमताज़ सादिक रहे, जिन्होंने अपने वक्तव्यों में नवांकुरों को कविता को बेहतर बनाने के गुर बताये और उनका हौसला बढ़ाया। विशिष्ट अतिथियों में श्री विनयशील चतुर्वेदी, श्रीमती संध्या प्रह्लाद, श्री राजेन्द्र राज निगम, श्रीमती सीमा अग्रवाल, सुश्री रीता जय हिंद एवं श्रीमती सरोज बाला कश्यप रहीं। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष अशोक कश्यप ने सरस्वती वंदना की। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से चयनित नवांकुर कवियों ने अपना शानदार काव्य-पाठ किया, जिनकी रचनाएँ 'काव्यांकुर 7' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। वे 16 नवांकुर कवि हैं - सुश्री कल्याणी शर्मा, सुश्री आँचल खटाना, श्रीमती इंदु निगम, सुश्री सरोज नेगी, श्रीमती अनुपम चितकारा, श्री राजीव कुमार दास, श्री योगेश कुमार ध्यानी, श्रीमती मीनाक्षी भसीन, श्रीमती बबीता गर्ग, मोहम्मद इलियास अली, श्री सचिन मेहता 'शालीन', मोहम्मद बेलाल सारणी, श्रीमती प्रज्ञा मिश्र, श्री अशोक छावड़ा, सुश्री आशा दिनकर एवं श्रीमती रश्मि लता मिश्र। सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान संस्था के अध्यक्ष श्री अशोक कश्यप, कोषाध्यक्ष श्री इमरान अंसारी एवं महासचिव श्री काली शंकर सौम्य ने किया। मंच-संचालन श्री नरेन्द्र नीहार और श्री जितेन्द्र प्रीतम ने किया। संस्था की कार्यकारिणी की सदस्या श्रीमती कल्पना शुक्ल, श्री इन्द्रजीत सिंह, श्री संजय गिरि एवं श्री जगदीश मीणा ने कार्यक्रम व्यवस्था में सहयोग किया

साभार : नवांकुर इंडिया.कॉम

पुरस्कार / सम्मान

जयपुर में गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुस्तक-वितरण-समारोह

11 नवंबर, 2019 को महाराणा प्रताप सभागृह, भारतीय विद्या भवन, जयपुर में चुरू ज़िले के माननीय विधायक श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ की अध्यक्षता में 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार' वितरण समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर फ़ाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का द्वारा कोटा राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री अम्बिका दत्त को पुरस्कृत किया गया। साथ ही जयपुर की स्वनामधन्य साहित्यकार श्रीमती सावित्री चौधरी को 'रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार' दिया गया। कमला गोइन्का फ़ाउंडेशन द्वारा राजस्थानी, हिंदी, कन्नड़, तेलुगु, तमिल, मलयालम आदि साहित्य के प्रति किए जा रहे कार्यों की भरपूर सराहना की गई।

इस अवसर पर चुरू से पधारे प्रसिद्ध साहित्यकार व 'प्रयास' संस्थान के न्यासी श्री दुलाराम सहारण के साथ नन्दकिशोर मोजासिया तथा जोधपुर से पधारे 'माणक' के प्रबंध संपादक श्री पदम मेहता व राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि श्री केशरदेव मारवाड़ी, जयपुर के श्री अरुण अग्रवाल तथा फ़ाउण्डेशन की सहन्यासी व समारोह के आयोजन में कर्मठ भूमिका में रहने वाली श्रीमती ललिता गोइन्का सहित अनेक गण्यमान्य साहित्यकार उपस्थित थे।

समारोह के अंत में श्री श्यामसुन्दर शर्मा ने समारोह की सफलता के लिए विशिष्ट अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. उमेद गोठवाल ने किया।

आभार : कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन

मथुरा में डॉ. अवनीश सिंह चौहान को 'बाबूसिंह स्मृति साहित्यरत्न सम्मान'

24 नवम्बर, 2019 को आलोक पब्लिक स्कूल, पंचवटी कॉलोनी, मथुरा के सभागार में बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, बरेली के मानविकी एवं पत्रकारिता महाविद्यालय में प्रोफ़ेसर और प्राचार्य के पद पर कार्यरत वृन्दावनवासी कवि, आलोचक, अनुवादक डॉ. अवनीश सिंह चौहान को 'बाबूसिंह स्मृति साहित्यरत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। बहुभाषी रचनाकार डॉ. चौहान हिंदी भाषा एवं साहित्य की वेब पत्रिका 'पूर्वाभास' और अंग्रेज़ी भाषा एवं साहित्य की अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका 'क्रिएशन एण्ड क्रिटिसिज़्म' के संपादक हैं। यह सम्मान उन्हें आलोक प्रताप सिंह मेमोरियल शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समिति, मथुरा, उत्तर प्रदेश ने प्रदान किया है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ शारदे की पूजा-अर्चना-वंदना से हुआ। समारोह की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री एस.एस. यादव ने की और मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. अशोक अग्रवाल, अति-विशिष्ट अतिथि महामंडलेश्वर योगी नवलगिरि जी महाराज, विशिष्ट अतिथि डॉ. अनिल गहलौत, श्री निशेश जार एवं डॉ. शेषपाल सिंह शेष रहे। इस कार्यक्रम में चार अन्य शब्द-साधकों डॉ. आर. पी. सारस्वत (सहारनपुर), डॉ. धर्मराज (मथुरा) एवं चित्रांश रजनीश राज ब्रजवासी (मथुरा) एवं कुमारी किरन वर्मा को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही इस समारोह में मथुरा के वरिष्ठ साहित्यकार संतोष कुमार सिंह की एक साथ चार बाल साहित्य की पुस्तकों - 'वृक्षों में भी होता जीवन', 'अपने चाचा चंपकलाल', 'चींटा ले खर्राटे' तथा 'मैं पूछूँगा आप बताएँ' का लोकार्पण गण्यमान्य अतिथियों एवं साहित्यकारों के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। मंच-संचालन अनुपम गौतम तथा धन्यवाद-ज्ञापन स्कूल प्रबंधक जीतेन्द्र सिंह सेंगर ने किया।

डॉ. अवनीश सिंह चौहान की रिपोर्ट

लखनऊ में श्री वीरेंद्र आस्तिक को 'साहित्य भूषण सम्मान'

30 दिसंबर, 2019 को लखनऊ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सम्मान समारोह में विख्यात कवि एवं आलोचक श्री वीरेंद्र आस्तिक को 'साहित्य भूषण सम्मान' से अलंकृत किया गया। उनको यह सम्मान माननीय विधानसभा अध्यक्ष डॉ. हृदय नारायण दीक्षित के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त, डॉ. भगवान सिंह, डॉ. मनमोहन सहगल, जलशक्ति मंत्री माननीय श्री महेंद्र सिंह, डॉ. अरिबम ब्रजकुमार शर्मा, डॉ. उषा किरण खान, डॉ. कमल कुमार, डॉ. ओम प्रकाश पांडेय, आचार्य श्री श्यामसुन्दर दुबे, आचार्य श्री रामदेव लाल विभोर, डॉ. रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर' आदि गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

डॉ. अवनीश सिंह चौहान की रिपोर्ट

प्रयागराज में डॉ. विजयानंद को 'साहित्य मनीषी सम्मान'

दिसंबर 2019 में हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार डॉ. विजयानंद को पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती परिषद् की ओर से 'साहित्य मनीषी सम्मान' से सम्मानित किया गया। पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल महामहिम पंडित केशरीनाथ त्रिपाठी के जन्मदिन पर आयोजित हिंदुस्तानी एकेडमी के सभागार में यह सम्मान पाँच विश्वविद्यालयों के पूर्व कुलपति, लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कृष्ण बिहारी पांडेय, बद्रिकाश्रम के शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती, उर्दू के प्रसिद्ध कवि जनाब काज़िम आब्दी तथा पूर्व राज्यपाल द्वारा संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

साहित्यकार विजयानंद की अब तक हिंदी की लगभग सभी विधाओं में 52 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उन्हें भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार सहित देश-विदेश की अनेक संस्थाओं द्वारा कई बार पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है। उनके साहित्य पर देश के कई विश्वविद्यालयों में पी.एच.डी. शोध प्रबंध प्रस्तुत किए जा चुके हैं। संप्रति आप 'वैश्विक साहित्य' त्रैमासिक पत्रिका के संपादक तथा 'भारतीय संस्कृति एवं साहित्य' संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

श्री अमरेंद्र, सचिव, भारतीय संस्कृति एवं साहित्य संस्थान, हवेलिया की रिपोर्ट

जम्मू में श्री यशपाल निर्मल को विद्या सागर (मानद डी.लिट सम्मान) की उपाधि

17 दिसंबर, 2019 को डोगरी एवं हिंदी भाषा के युवा बाल साहित्यकार, लघुकथाकार, कथाकार, कवि, आलोचक, लेखक, अनुवादक, भाषाविद्, सांस्कृतिककर्मी एवं समाजसेवी श्री यशपाल निर्मल को उनके डोगरी एवं हिंदी भाषा और साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर की ओर से विद्या सागर (मानद डी. लिट सम्मान) की उपाधि से विभूषित किया गया। अब तक हिंदी, डोगरी एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में विभिन्न विषयों पर आपकी 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपको अनुवाद कार्य, साहित्य सृजन, समाज सेवा, पत्रकारिता और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान हेतु कई मान-सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

श्री यशपाल निर्मल की रिपोर्ट

नई दिल्ली में लोकार्पण एवं रामवृक्ष बेनीपुरी पत्रकारिता सम्मान 2019

3 दिसंबर, 2019 को 'आर्यावर्त साहित्य-संस्कृति' संस्थान, नई दिल्ली द्वारा साहित्य अकादमी के सभागार में पुस्तक लोकार्पण एवं रामवृक्ष बेनीपुरी पत्रकारिता सम्मान समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर लोकार्पणकर्ता के रूप में माननीय प्रो. अनिरुद्ध देशपांडे, अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, मुख्य अतिथि के रूप में महामहिम प्रो. ओमप्रकाश कोहली, पूर्व राज्यपाल, गुजरात तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय श्री विनय सहस्त्रबुद्धे, सांसद एवं अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् उपस्थित थे। इस अवसर पर पत्रकारिता के प्रसिद्ध हस्ताक्षर प्रो. अरुण कुमार भगत, डीन एवं विभागाध्यक्ष, मीडिया अध्ययन-विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी की आपातकाल पर तीन पुस्तकों का लोकार्पण एवं देश के 11 प्रतिष्ठित साहित्यकारों को सम्मान दिया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. संजीव कुमार शर्मा, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी ने की तथा डॉ. देवेंद्र दीपक, पूर्व निदेशक, म.प्र. साहित्य अकादमी, भोपाल के सन्निधान में लोकार्पण और सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में डॉ. आशीष कंधवे, सर्वश्री डॉ. राम शरण गौड़, डॉ. वेद व्यथित, डॉ. मालती, डॉ. विनोद बब्बर, श्री हर्षवर्धन, डॉ. सारिका कालरा, डॉ. अशोक कुमार ज्योति, श्री संजीव सिन्हा, श्री गुंजन अग्रवाल, डॉ. लहरी राम मीणा को रामवृक्ष बेनीपुरी पत्रकारिता सम्मान 2019 से विभूषित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अविनाश कुमार सिंह तथा सह-संयोजक प्रियंका कुमारी और भूपेंद्र कुमार थे। भव्य लोकार्पण एवं सम्मान समारोह का संचालन सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अशोक कुमार ज्योति ने किया। इस अवसर पर दिल्ली एवं भारतवर्ष के अनेक गण्यमान्य पत्रकार और साहित्यकार उपस्थित थे।

डॉ. आशीष कंधवे की रिपोर्ट
साभार : साहित्य सिनेमा सेतु वेब पोर्टल

नई दिल्ली में राष्ट्रीय हिंदी सम्मान समारोह 2019

11 अक्तूबर, 2019 को हिंदी विकास संस्थान, दिल्ली द्वारा तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली के सभागार में राष्ट्रीय हिंदी सम्मान समारोह 2019 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश के 16 प्रांतों के हिंदी प्रेमियों, प्रतिष्ठित कवियों, शिक्षाविदों एवं प्रतिभाशाली बच्चों ने इस समारोह में भाग लिया। इस अवसर

पर राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2019 में प्रतिभाग कर राष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित करने वाले बच्चों को समारोह में सम्मानित किया गया। तीन मूर्ति भवन में आयोजित राष्ट्रीय सम्मान समारोह में हिंदी विकास संस्थान के अध्यक्ष डॉ. पीयूष कुमार शर्मा ने पुष्पगुच्छ के साथ अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन भी किया गया, जिसका शीर्षक था - *'हिंदी का भविष्य, संदर्भ शिक्षा'।*

हिंदी विकास संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2019 में जिन प्रतियोगियों ने राष्ट्रीय स्तर पर नए कीर्तिमान स्थापित किए उन्हें प्रमाण-पत्र, ट्रॉफ़ी एवं नकद राशि के साथ पुरस्कृत किया गया। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष राष्ट्रीय हिंदी नायक सम्मान प्रभु दयाल पब्लिक स्कूल शालीमार बाग नई दिल्ली को प्रदान किया गया। इस प्रतियोगिता में 16 राज्यों के 211 विद्यालयों के लगभग 20,000 प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित तीन मूर्ति भवन शोध केंद्र के अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र शुक्ल ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। हिंदी विकास संस्थान की महासचिव श्रीमती कल्पना शर्मा ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : देवभूमि संवाद

मथुरा में साहित्यकार सम्मान एवं पुस्तक लोकार्पण समारोह

13 अक्तूबर, 2019 को मथुरा के सुप्रसिद्ध विद्यालय दाऊदयाल एडवोकेट सरस्वती विद्या मंदिर के प्रांगण में तुलसी साहित्य संस्कृति अकादमी न्यास एवं पंडित हरप्रसाद पाठक स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति के संयुक्त तत्वावधान में साहित्यकार सम्मान एवं पुस्तक लोकार्पण समारोह का आयोजन हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजीव सक्सेना रहे तथा विशिष्ट अतिथि लखनऊ से पधारे साहित्यकार श्री आलोक कुमार दुबे रहे।

प्रथम सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अमिता दुबे एवं फ़रीदाबाद से पधारे साहित्यकार श्रीमती कमल कपूर को 'स्वर्गीय मायादेवी चतुर्वेदी स्मृति साहित्य साधिका सम्मान', आकोला के डॉ. पंकज वीर बाल किशोर तथा गाडरवारा के श्री कुशलेंद्र श्रीवास्तव को 'पंडित हरप्रसाद पाठक स्मृति बाल साहित्य भूषण पुरस्कार', वरिष्ठ कथाकार श्रीमती शशि पाठक को 'श्रीमती सत्यवती देवी स्मृति साहित्य सम्मान', श्री श्याम प्रकाश देवपुरा को 'पंडित उमाशंकर दीक्षित स्मृति साहित्य साधक सम्मान', श्री भारत भूषण शर्मा को 'श्री धीर सिंह स्मृति कला साधक', भोपाल से श्रीमती कीर्ति को 'श्रीमती धोरादेवी स्मृति साहित्य साधिका सम्मान', राया के डॉ. विष्णु शरण भारद्वाज तथा वाराणसी की नम्रता मिश्र को 'श्री शिवनारायण स्मृति साहित्य सम्मान', प्रो. हेमराज मीणा को 'डॉक्टर ओम प्रकाश श्रीवास्तव स्मृति साहित्य सम्मान', आगरा से डॉ. शेषपाल सिंह शेष को 'श्री चंद्रपाल शर्मा रसिक हाथरसी स्मृति साहित्य सम्मान', मुरादाबाद से डॉ. महेश दिवाकर को 'श्री श्याम श्रोत्रिय स्मृति साहित्य सम्मान' तथा फ़िरोज़ाबाद के डॉ. रामसनेही लाल शर्मा यायावर को 'श्री प्रताप सिंह गहलोत सजल सौरभ सम्मान' तथा भीलवाड़ा से श्रीमती रेखा लोढ़ा स्मित को 'श्रीमती रामदेवी गहलोत स्मृति सजल सुरभि सम्मान', भोपाल के श्री अनिल अग्रवाल को 'डॉक्टर वृंदावन दास पंड्या स्मृति सम्मान' तथा श्री राहुल प्रजापति को 'डॉक्टर रमन दास पंड्या स्मृति सम्मान' से विभूषित किया गया।

द्वितीय सत्र में वरिष्ठ कथाकार डॉ. दिनेश पाठक शशि की ब्रजभाषा कहानी-संग्रह 'परिकम्मा' तथा बाल साहित्य-संग्रह 'प्रेरक बाल कहानियाँ', आचार्य नीरज शास्त्री की राष्ट्रीय गीत कृति 'भारत भाग्य विधाता', श्री राम सिंह साद की 'जीवन चिंतन सार', श्रीमती मीरा शर्मा की बाल काव्य कृति 'फूलदेख मुस्काई चिड़िया', डॉ. अमिता दुबे की कृति 'राह मिल गई', श्रीमती कमल कपूर की तांका कृति 'स्निग्ध सवेरे' तथा श्रीमती लता श्री की चार कृतियों क्रमशः 'तेरी याद आई', 'यादों की बारात', 'पतझरों में भी बहारों को ठिकाने दो' तथा 'बनी दुल्हनिया चुहिया रानी' का लोकार्पण किया गया।

इसके उपरांत देश के प्रत्येक कोने से पधारे 18 बाल साहित्यकारों को 'पंडित हरप्रसद पाठक बाल साहित्य श्री' तथा 17 वरिष्ठ साहित्यकारों को 'पंडित हरप्रसाद पाठक हिंदी रत्न सम्मान' से सम्मानित किया गया। समारोह में कई साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ आचार्य नीरज शास्त्री ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन न्यास के सचिव डॉ. धनंजय तिवारी ने किया।

साभार : तरुण मित्र.इन

ठाणे में डॉ. शिवदत्त शुक्ल स्मृति साहित्य भूषण सम्मान

5 अक्तूबर, 2019 को ठाणे स्थित मराठी ग्रंथ संग्रहालय के सभागृह में अखिल भारतीय अग्निशिखा मंच एवं युवा कवि अरविंद पांडेय के संयुक्त संयोजन से डॉ. शिवदत्त शुक्ल स्मृति साहित्य भूषण सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ।

माँ शारदा की पूजा, माल्यार्पण व दीप-प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। इसके बाद सरस्वती वंदना हुई। फिर मंच की अध्यक्षा अलका पाण्डेय ने मंच का परिचय व स्वागत भाषण दिया। श्रीमती प्रमिला शर्मा ने दूसरे साहित्य भूषण सम्मान समारोह का शानदार ढंग से संचालन किया। समारोह की अध्यक्षता पंडित किरण मिश्र, वरिष्ठ गीतकार ने की और मुख्य अतिथि हरीश पाठक, वरिष्ठ पत्रकार एवं कथाकार रहे। विशेष अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार मुरलीधर पाण्डेय व वरिष्ठ पत्रकार अभिलाष अवस्थी रहे एवं मुख्य वक्ता युवा साहित्यकार पवन तिवारी रहे।

कथाकार, पत्रकार हरीश पाठक एवं वरिष्ठ गीतकार किरण मिश्र के हाथों वरिष्ठ पत्रकार अभिलाष अवस्थी, वरिष्ठ साहित्यकार मुरलीधर पाण्डेय, युवा साहित्यकार पवन तिवारी एवं मंच की अध्यक्षा अलका पाण्डेय की उपस्थिति में सम्मान मूर्ति श्रीहरि वाणी एवं राधेकृष्ण चतुर्वेदी 'अबोध' को दूसरा साहित्य भूषण सम्मान-2019 प्रदान किया गया। इस अवसर पर दोनों विभूतियों के व्यक्तित्व और कृतित्व पर मुख्य वक्ता पवन तिवारी ने प्रकाश डाला। तदुपरांत सभी अतिथियों ने सम्मान मूर्ति द्वय के व्यक्तित्व पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर महानगर के अनेक साहित्यकार, पत्रकार, कवि एवं बुद्धिजीवी उपस्थित रहे। समारोह के अंत में अरविंद पाण्डेय ने आभार व्यक्त किया।

साभार : हमार पूर्वांचल.कॉम

ब्रिटेन से दिल्ली पधारे हिंदी विद्यार्थियों और शिक्षकों का सम्मान समारोह

18 अक्तूबर, 2019 को साहित्य और संस्कृति के लिए समर्पित संस्था 'अक्षरम्' तथा 'वाणी प्रकाशन' के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सभागार में ब्रिटेन से दिल्ली पधारे हिंदी विद्यार्थियों और शिक्षकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। विदेश में हिंदी अध्ययन-अध्यापन से संबद्ध इस पंद्रह सदस्यीय विशिष्ट दल के भारत भ्रमण का नेतृत्व ब्रिटेन के प्रख्यात कवि डॉ. पद्मेश गुप्त और हिंदी शिक्षिका सुश्री सुरेखा चोपला द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष डॉ. कमल किशोर गोयनका ने संस्थान की ओर से विदेश में हिंदी अध्ययन और अध्यापन के लिए हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। मुख्य अतिथि संसद सदस्य श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी ने देश-विदेश में हिंदी के अभियान को सशक्त बनाने पर बल दिया। इस अवसर पर नेपाल के पूर्व मंत्री श्री मंगल प्रसाद गुप्त ने भारत-नेपाल के भाषायी जुड़ाव को रेखांकित किया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री जय प्रकाश अग्रवाल ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा का गौरव दिलाने के लिए भारत सरकार के संकल्प को दोहराया। अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के महासचिव श्री श्याम परांडे ने अंतरराष्ट्रीय जगत में हिंदी की बढ़ती साख पर प्रसन्नता व्यक्त की। अमेरिका से पधारीं प्रवासी साहित्यकार डॉ. मृदुल कीर्ति ने हिंदी को आध्यात्मिक और वैज्ञानिक संदर्भों में व्याख्यायित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने हिंदी और भारत यात्रा के संबंध में अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया। वाणी प्रकाशन की ओर से अदिति महेश्वरी ने इन छात्रों का अभिनंदन किया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों को चरखा प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। 'अक्षरम्' के अध्यक्ष कवि-व्यंग्यकार अनिल जोशी ने ब्रिटेन और फ़िजी स्थित भारतीय दूतावासों में अपने कार्यकाल के दौरान विदेशी विद्यार्थियों की भाषा सीखने की ललक को प्रेरक बताते हुए सभी विदेशी मेहमानों और सम्मानित अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, नरेश शांडिल्य, प्राचार्य डॉ. रमा, राकेश पांडे, राकेश दुबे, विनोद संदलेश सहित 'अक्षरम्' के अनेक गण्यमान्य सदस्य, साहित्यकार और हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। 'अक्षरम्' की महासचिव कवयित्री-कथाकार अलका सिन्हा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

श्रद्धांजलि

श्री गंगा प्रसाद विमल

23 दिसंबर, 2019 को दक्षिण श्रीलंका में प्रख्यात हिंदी कवि एवं कथाकार श्री गंगा प्रसाद विमल का आकस्मिक निधन हो गया। आपका निधन श्रीलंका में एक सड़क दुर्घटना में हुआ। गंगा प्रसाद विमल उन हिंदी लेखकों में अग्रणी थे, जिन्होंने 'अकहानी आंदोलन' की शुरुआत की और अपनी बहुआयामी रचनाशीलता से साहित्य में श्रीवृद्धि की। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान समेत विभिन्न संस्थानों में प्रमुख ज़िम्मेदारियाँ निभा चुके गंगा प्रसाद विमल लेखक और कवि होने के साथ ही बड़े समीक्षक तथा अनुवादक भी थे। आपका जन्म 1939 में उत्तराखंड के उत्तरकाशी में हुआ था। आपके प्रसिद्ध कविता संग्रहों में 'बोधि-वृक्ष', 'इतना कुछ', 'सन्नाटे से मुठभेड़', 'मैं वहाँ हूँ' और 'कुछ तो है' आदि हैं। 2013 में प्रकाशित आपका अंतिम उपन्यास 'मानुसखोर' है। आपके कहानी संग्रह 'कोई शुरुआत', 'अतीत में कुछ', 'इधर-उधर', 'बाहर न भीतर' और 'खोई हुई थाती' का भी हिंदी साहित्य में अपना स्थान है। आपने उपन्यास, नाटक, आलोचना भी लिखीं, तो कई रचनाओं का संपादन कार्य भी किया। आपको भारतीय भाषा पुरस्कार, संगीत अकादमी सम्मान समेत अनेक भारतीय पुरस्कारों और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से भी विभूषित किया गया है।

आभार : एन.डी.टी.वी इंडिया एवं श्री के. श्रीनिवासराव

श्री जगत नारायण 'जगतबंधु'

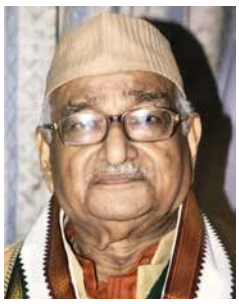

12 नवंबर, 2019 को वयोवृद्ध साहित्य सेवी श्री जगत नारायण 'जगतबंधु' का निधन हो गया। अपने जीवन को किस प्रकार मूल्यवान और गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है, इसके जीवंत उदाहरण और प्रेरणा-पुरुष थे जगत नारायण प्रसाद 'जगतबंधु'। आपका अनुशासित और कल्याणकारी जीवन स्वयं ही एक ऐसा ग्रंथ रहा, जिसका अध्ययन कर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को मूल्यवान और सार्थक बना सकता है। 92 वर्ष की अवस्था में भी, आप 70 वर्ष के किसी व्यक्ति से अधिक स्वस्थ, सक्रिय और ज़िंदादिल दिखते थे। आपको देखकर

आयु का अनुमान करना कठिन था। आपके क्रियाशील और स्वस्थ लंबे जीवन का रहस्य यह था कि आप सामान्य वेशभूषा में एक साधु-पुरुष थे। जीवन से सात्विक-प्रेम रखने वाले और सबके लिए कल्याण की सद्कामना रखने वाले कर्म-योगी थे जगतबंधु जी।

श्री स्वयं प्रकाश

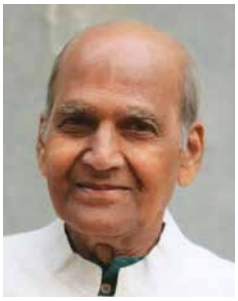

7 दिसंबर, 2019 को हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार श्री स्वयं प्रकाश का मुंबई के लीलावती अस्पताल में निधन हो गया। आप 72 वर्ष के थे। आप हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड में सतर्कता अधिकारी और हिंदी अधिकारी रहे। विगत लगभग दो दशकों से आप भोपाल में रह रहे थे। आप प्रगतिशील लेखक संघ की मुख पत्रिका 'वसुधा' और बच्चों की चर्चित पत्रिका 'चकमक' के सम्पादक रहे। आपके एक दर्जन से अधिक कहानी-संग्रह और पाँच उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। आपको साहित्य अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से छपी बच्चों की पुस्तक 'प्यारे भाई रामसहाय' के लिए बाल साहित्य का अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसके अलावा आपको 'पहल सम्मान', 'भवभूति सम्मान', 'कथाक्रम सम्मान' एवं 'वनमाली पुरस्कार' जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हैं। आपकी आत्मकथात्मक कृति 'धूप में नंगे पाँव' का प्रकाशन वर्ष 2019 में हुआ।

साभार : एन.डी.टी.वी. इंडिया

श्री मलखान सिंह

9 अगस्त, 2019 को दलित विमर्श के श्रेष्ठ कवि श्री मलखान सिंह का निधन हो गया। कवि मलखान सिंह हिंदी कविता में

दलितों की आवाज़ थे एवं कविता के महत्त्वपूर्ण स्तंभ थे। 'सुनो ब्राह्मण' कविता संग्रह से उन्होंने दलित कविता की भाषा शिल्प और कथन को नया अंदाज़ दिया था। आपका जन्म 30 सितंबर 1948 को उत्तर प्रदेश के हाथरस में हुआ था। आप समाज में शोषितों की सशक्त आवाज़ थे। जन्मजात क्रांतिकारी और विद्रोही स्वभाव उनकी कविता में सहज देखा जा सकता है। हिंदी आउटलुक के सन् 2012 के साहित्य सर्वेक्षण में आपको हिंदी दलित कविता का सबसे लोकप्रिय कवि माना गया। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं - 'सफ़ेद हाथी', 'सुनो ब्राह्मण', 'एक पूरी उम्र', 'पूस का एक दिन', 'आज़ादी' और 'ज्वालामुखी के मुहाने'।

साभार : फ़ारवर्ड प्रेस एवं अमर उजाला काव्य

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

सूचना

अब सीखें विधिवत हिंदी टाइपिंग

श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच द्वारा विकसित स्पर्श हिंदी टाइपिंग ट्यूटर से विधिवत हिंदी टंकण सरल बन गया है। 'स्पर्श' को निम्नलिखित लिंक से डाउनलोड किया जा सकता है :

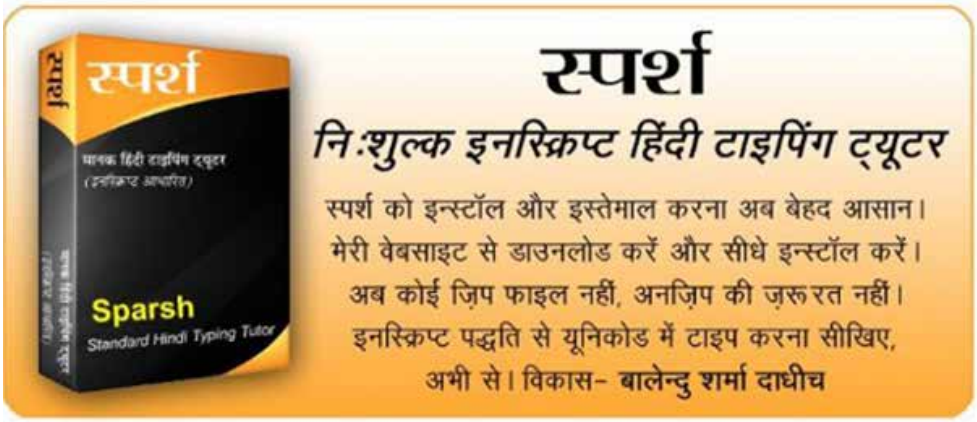

डाउनलोड लिंक-balendu.com/labs/sparsh/

साभार : श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच का फ़ेसबुक पृष्ठ, 1 सितंबर, 2019

उत्तराखंड सरकार द्वारा कक्षा 3 से 8 तक संस्कृत अनिवार्य बनाने का निर्णय

उत्तराखंड सरकार ने कक्षा 3 से 8 तक के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य करने का निर्णय लिया है। शिक्षा मंत्री द्वारा राज्य शिक्षा विभाग को निर्देश दिया गया है कि वे राज्य में संचालित सभी स्कूलों में इस निर्णय को सख्ती से लागू करें। राज्य शिक्षा मंत्री, माननीय श्री अरविंद पांडे ने कहा *"संस्कृत हमारी प्राचीन और देवताओं की भाषा है। हमें स्वीकार करना चाहिए कि इस भाषा ने हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है। हमारी पीढ़ी को इस भाषा का ज्ञान होना चाहिए।"* राज्य शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि संस्कृत के पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए जल्द ही दिशा-निर्देश दिए जाएँगे।

द न्यू इंडियन एक्सप्रेस, श्री विनीत उपाध्याय की रिपोर्ट, 1 सितंबर, 2019

अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2020 के उपलक्ष्य में एक **अंतरराष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर बाँटा गया। 10 जनवरी, 2020 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर परिणामों की घोषणा की गई। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में प्रत्येक विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

परिणाम प्रस्तुत हैं :

प्रधान संपादक	: प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक	: डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक	: श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम	: श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता	: विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन	: +230 660 0800
इ-मेल	: info@vishwahindi.com
वेबसाइट	: www.vishwahindi.com
डेटाबेस	: www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक पृष्ठ	: www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

संपादकीय

भाषा और संस्कृति : एक पड़ताल

प्रायः सभी जीवंत भाषाएँ अपनी सांस्कृतिक विरासत से ऊर्जा व उर्वरक प्राप्त कर अन्य सहोदरा व आंचलिक भाषाओं व बोलियों को आत्मसात कर अपनी क्षमता को कई गुना बढ़ाते हुए एक नए युग का आरम्भ करती हैं। यद्यपि किसी भी समुदाय या समाज की आधारशिला उस समुदाय की भाषा होती है और भाषा ही वह मज़बूत बंधन है, जो अनन्त काल तक उस समुदाय को बिखरने, टूटने और लुप्त होने के खतरे से बचाते हुए एक सूत्र में बाँधकर रखती है। भाषा वह सांस्कृतिक कवच होती है, जो समूची मानवता को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पराधीनता से बचाती है तथा सुख-दुख और सामुदायिक उल्लास को मज़बूत आधार प्रदान करती है। भाषा केवल विचारों की संवाहिका भर नहीं होती, वह स्वयं संस्कृति भी होती है, जातीय सभ्यता का प्रतीक होती है और सामाजिक चेतना का सांस्कृतिक इतिहास भी होती है। वह भाषा ही है, जो मानव मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है तथा उसके माध्यम से जातीय सभ्यता की सार्वभौमिक पहचान बनती है, अन्यथा किसी जाति को हाशिये पर ले जाकर गर्त में ढकेलना हो, तो उसकी भाषा को खत्म कर परिणाम को आसानी से देखा जा सकता है। किन्तु विडम्बना यह है कि छद्म विकास के नाम पर हमारे स्वत्व और स्वाभिमान को कुचलने की साज़िश निरंतर हो रही है और धीरे-धीरे सांस्कृतिक पराधीनता की आहट भी सुनाई देने लगी है। अतः स्वभाव के स्तर पर, संस्कार के स्तर पर और चिन्तन के स्तर पर निज भाषा को जीवन और जगत के व्यवहार की भाषा बनाना अपरिहार्य हो गया है। अन्यथा सांस्कृतिक स्वाधीनता को प्राप्त करना और उसे बचाए रखना दुष्कर हो जाएगा। सैकड़ों वर्षों की दासता के बाद राजनीतिक आज़ादी या यह कहें कि सत्ता के हस्तांतरण के बाद अधिकांश जनता निरक्षर तो थी, किंतु भीतर से शिक्षित और ज्ञानी थी। बाद में सरकारी प्रयासों से साक्षरता की लोक-लुभावनी दर तो निःसन्देह बढ़ी, किंतु सही अर्थों में क्या लोग शिक्षित हो सके? शायद नहीं। विनम्रता का त्याग कर यह कहना चाहूँगा कि साक्षरों के साथ-साथ कुपढ़ों की संख्या भी खूब बढ़ी जिन्हें समाज और देश के लिए उपयोगी न बनाया जा सका। तथाकथित मुट्ठीभर शिक्षित और अवसरवादी सुविधाओं की गुलामी में फँसे लोग हमारा इतिहास और भूगोल बदलने पर आमादा हैं। उन्हें हिकारत की नज़र से देखने की आवश्यकता शिद्दत से महसूस की जाती रही है।

वर्तमान परिदृश्य को वैचारिक आईने में रखकर देखा जाए, तो बदलते सांस्कृतिक मूल्यों में ह्रास परिलक्षित होता है। एक नवोदित अपसंस्कृति के भयावह चेहरे को देखना नियति बन गई है। सामाजिक सरोकारों से जनमानस का दूर-दूर का नाता नहीं रहा। भोगवादी जीवन दृष्टि की जकड़न को सहज ही महसूस किया जा रहा है। अनेक विकृतियाँ विस्तार पा रही हैं। यह अपसंस्कृति छद्म आधुनिकता एवं झूठे विकास का बेसुरा ढोल पीट रही है और तथाकथित सुसभ्य और सुसंस्कृत समाज आज उनकी ही धुन पर थिरक रहा है। सामाजिक ताने-बाने टूटकर बिखर चुके हैं, मर्यादाएँ थक कर मौन हो गई हैं। भूमंडलीकृत पूंजीवादी अहंकारी चेहरा और अनैतिकता के घाल-मेल से एक नई 'संस्कृति' का जन्म हुआ है। भाषा की संस्कृति ने कभी सामाजिक सरोकारों को सामने रखकर अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज की, तो कभी ठीक उसी तरह अपसंस्कृति ने भी नए भाषाई मुखौटे को पहन विकास तंत्र को अपनी मुट्ठी में कर लिया, जिससे सामाजिक संतुलन तो बिगड़ ही रहा है, साथ ही सांस्कृतिक संकट भी आसन्न है। यद्यपि पहले भी एक दूसरे पर सांस्कृतिक आक्रमण होते रहे हैं। लेकिन वे आक्रमण जन-शक्ति प्रदर्शन एवं वर्चस्व के लिए होते थे। संभवतः वे उतने घातक नहीं होते थे, किंतु आज मीडिया, आर्थिक भूमंडलीकरण, सूचना-तकनीक तथा सांस्कृतिक भूमंडलीकरण के गठजोड़ अपसंस्कृति और सांस्कृतिक संकट को एक नई बहस की ओर ले जाते हुए प्रतीत हो रहे हैं। यद्यपि भाषा अपनी संस्कृति के प्रति सजग किंतु उदार रही है, क्योंकि वर्ग विभाजन भाषागत विभाजन को प्रभावित करता है। भाषा और संस्कृति दोनों अपने-अपने अतीत, वर्तमान व भविष्य के साथ साक्षी भाव से खड़ी हैं। भाषा अपनी परम्परा के साथ खड़ी दिखी, परम्परा श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर की ओर जाने की प्रक्रिया है। परम्परा अतीत के प्रति विनम्र स्वीकार्यता और भविष्य के प्रति आदर का भाव रखती है। भारतीय समाज सदियों से परम्पराबद्ध रहा है, इतिहासबद्ध कभी नहीं रहा और वह इतिहास में नहीं वरन मिथक में जीता है।

संस्कृति का संसार सदैव सकारात्मकता और नैतिकता के मज़बूत घेरे में रहता है। मूल्यों की धारा टूटन, घुटन और विघटन के रास्ते बहती अवश्य है, किंतु इस बहाव में महत्तर संस्कृति के इतिहास में प्रति संस्कृतियों को भी स्थान मिलता है। सांस्कृतिक प्रवाह जब अपने आवेग की तीव्रता को शांत करता है, तब अमृतमयी धारा बन वसुन्धरा को ***'सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलाम्'*** बनाने का उपक्रम करता है। धीरे-धीरे वह सामुदायिक जीवन पद्धति का अंग बनता है। वह प्रवाह मात्र संस्कारों, व्यवहारों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें संभावनाओं की आकाश गंगा की तलाश का तत्व भी निहित रहता है। युगीन दबाव से ऊपर उठने की अनवरत चेष्टा और छटपटाहट संस्कृति की सत्ता का एक विशेष प्रयोजन भी होता है। आदर्श की संकल्पना संभावनाओं को चिह्नित करती है, परिणामस्वरूप सांस्कृतिक सम्पन्नता भाषा को भी सम्पन्न बनाती है और फिर उसके सहारे वैचारिकी युग धर्म के अनुसार अपनी यात्रा को पूर्णता प्रदान करती है। यह विदित है कि मनुष्य प्रतीकों और मिथकों में ही जीता है। भाषा उसके सृजन का माध्यम बनती है और लोक-मानस की संवेदना को सृजन में परिवर्तित करती है। क्योंकि लोक-मानस ही भाषा-निर्माण के प्रति सजग हो संस्कृति पर वैचारिकी की मुहर लगाता है। संस्कृति को परिभाषित करने की क्षमता भाषा के पास ही होती है। भाषा जितनी उन्नत होगी, संस्कृति भी उतनी ही प्रौढ़, प्रांजल और समृद्ध। भाषा संस्कृति को समृद्ध बनाने में महनीय भूमिका निभाती है। अतः दोनों में अन्योनाश्रित सम्बन्ध की मज़बूती भी है, किंतु जैसे ही संस्कृति में उपभोक्तावादी मूल्यों की मिलावट हुई, भाषा उसके हाथ की कठपुतली बन जाती है। फिर तथाकथित विकास के औपनवेशिक चरित्र के साथ अस्तित्व बचाए रखना दुष्कर हो जाता है। साथ ही साथ भाषाई और सांस्कृतिक वैविध्य को भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था से क्षत-विक्षत होने का खतरा भी बढ़ जाता है। असंवेदनशील होती दुनिया के हिस्से के रूप में तब्दील होने की आशंका भी घर कर लेती है। इस प्रकार बलात सृजित नए परिवेश में जीने की अनिवार्यता एक विवशता बन जाती है, फिर भाषाई व सांस्कृतिक गुलामी की पृष्ठभूमि तैयार होने लगती है और स्वाधीन देश की स्वाधीन चेतना के कुंद पड़ने का खतरा और बढ़ जाता है। फिर नए सिरे से उक्त बन्धनों से मुक्ति के लिए पुनः आन्दोलनधर्मी सोच को उठ खड़ा होना होता है, ताकि भाषा और संस्कृति के महत्त्वपूर्ण घटकों के सहारे राष्ट्र की बुनियाद को मज़बूती प्रदान की जा सके।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव